UPSC Hindi Compulsory Language - 2023

1. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 600 शब्दों में निबन्ध लिखिए: 100

(a) उपभोक्तावादी जीवन-शैली और पर्यावरण

(b) मोबाइल फोन की लत

(c) ऑनलाइन शिक्षा की सीमाएँ

(d) आतंकवाद: एक चुनौती

2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट, सही और संक्षिप्त भाषा में दीजिए: 12×5=60

जब एक किसान खेतों में काम करता है, तो वह खाद्यान्न और उद्योगों के लिए कच्चे माल का उत्पादन करता है। कपास ही कपड़े के कारखानों, विद्युतकरघों में कपड़े का रूप धारण कर लेता है। गाड़ियाँ सामान को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाती हैं। हम जानते हैं कि किसी देश में एक वर्ष में उत्पादित सभी वस्तुओं और सेवाओं का कुल मूल्य इसका सकल घरेलू उत्पाद कहलाता है। हमें निर्यात के लिए मूल्य प्राप्त होता है और आयात के लिए मूल्य चुकाना पड़ता है। इसमें हम देखते हैं कि निवल अर्जन धनात्मक हो सकता है या ऋणात्मक हो सकता है या शून्य हो सकता है। हम प्राप्त अर्जनों का योग करते हैं तो हमें उस वर्ष के लिए देश का सकल घरेलू उत्पाद प्राप्त होता है।

सकल राष्ट्रीय उत्पाद में योगदान देने वाले सभी क्रियाकलापों को हम आर्थिक क्रियाएँ कहते हैं। वे सभी व्यक्ति जो आर्थिक क्रियाओं में संलग्न होते हैं, श्रमिक कहलाते हैं, चाहे वे उच्च या निम्न किसी भी स्तर पर कार्य कर रहे हैं। यदि इनमें से कुछ लोग बीमारी, जख्म होने आदि शारीरिक कष्टों, खराब मौसम, त्यौहार या सामाजिक-धार्मिक उत्सवों के कारण अस्थायी रूप से काम पर नहीं आ पाते, तो भी उन्हें श्रमिक ही माना जाता है। इन कामों में लगे मुख्य श्रमिकों की सहायता करने वालों को भी हम श्रमिक ही मानते हैं। आमतौर पर हम ऐसा सोचते हैं कि जिन्हें काम के बदले नियोक्ता द्वारा कुछ भुगतान किया जाता है, उन्हें श्रमिक कहा जाता है। पर ऐसा नहीं है। जो व्यक्ति स्व-नियोजित होते हैं, वे भी श्रमिक ही होते हैं।

भारत में रोज़गार की प्रकृति बहुमुखी है। कुछ लोगों को वर्ष भर रोज़गार प्राप्त होता है, तो कुछ लोग वर्ष में कुछ महीने ही रोज़गार पाते हैं। अधिकांश मज़दूरों को अपने कार्य की उचित मज़दूरी नहीं मिल पाती। वैसे श्रमिकों की संख्या का अनुमान लगाते समय जितने भी व्यक्ति आर्थिक कार्यों में लगे होते हैं, उन सबको रोज़गार में लगे लोगों की श्रेणी में शामिल किया जाता है। वर्ष 2011-12 में भारत की कुल श्रमशक्ति का आकार लगभग 473 मिलियन आँका गया । क्योंकि देश के अधिकांश लोग ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करते हैं, इसलिए ग्रामीण श्रमबल का अनुपात भी शहरी श्रमबल से अधिक है। इन 473 मिलियन श्रमिकों में तीन-चौथाई श्रमिक ग्रामीण हैं।

भारत में श्रमशक्ति में पुरुषों की बहुलता है। ग्रामीण क्षेत्र में महिला श्रमिक कुल श्रमबल का एक-तिहाई हैं, तो शहरों में केवल 20 प्रतिशत महिलाएँ ही श्रमबल में भागीदार पाई गई हैं। महिलाएँ खाना बनाने, पानी लाने, ईंधन बीनने के साथ-साथ खेतों में भी काम करती हैं। उन्हें नकद या अनाज के रूप में मज़दूरी नहीं मिलती। कितने ही मामलों में तो कुछ भी भुगतान नहीं किया जाता। इसी कारण इन महिलाओं को श्रमिक वर्ग में भी शामिल नहीं किया जाता। अर्थशास्त्रियों का आग्रह है कि इन महिलाओं को भी श्रमिक ही माना जाना चाहिए।

(a) श्रमिक कौन होता है? **12**

(b) सकल घरेलू उत्पाद क्या है? **12**

(c) भारत में रोज़गार की प्रकृति कैसी है? **12**

(d) किन महिलाओं को श्रमिक नहीं माना जाता है? **12**

(e) भारत में श्रमिक जनसंख्या अनुपात क्या है? **12**

3. निम्नलिखित अनुच्छेद का सारांश लगभग एक-तिहाई शब्दों में लिखिए। इसका शीर्षक लिखने की आवश्यकता नहीं है। सारांश अपने शब्दों में ही लिखिए। 60

जो शब्द सबसे कम समझ में आते हैं और जिनका उपयोग होता है सबसे अधिक, ऐसे दो शब्द हैं - सभ्यता और संस्कृति। कल्पना कीजिए उस समय की जब मानव समाज का अग्नि देवता से साक्षात् नहीं हुआ था। आज तो घर-घर चूल्हा जलता है। जिस आदमी ने पहले पहल आग का आविष्कार किया होगा, वह कितना बड़ा आविष्कर्ता होगा ! अथवा कल्पना कीजिए उस समय की जब मानव को सुई-धागे का परिचय न था। जिस मनुष्य ने लोहे के एक टुकड़े को सुई का स्वरूप दिया होगा, वह भी कितना बड़ा आविष्कर्ता होगा।

इन्हीं दो उदाहरणों पर विचार कीजिए; पहले उदाहरण में दो बातें हैं: पहला, एक व्यक्ति विशेष की आग का आविष्कार कर सकने की शक्ति है और दूसरा, आग का आविष्कार। इसी प्रकार दूसरे सुई-धागे के उदाहरण में एक चीज़ है सुई-धागे का आविष्कार कर सकने की शक्ति और दूसरी चीज़ है सुई-धागे का आविष्कार। जिस योग्यता, प्रवृत्ति अथवा प्रेरणा के बल पर आग का व सुई-धागे का आविष्कार हुआ, वह है व्यक्ति विशेष की संस्कृति; और उस संस्कृति द्वारा जो आविष्कार हुआ, जो चीज़ उसने अपने तथा दूसरों के लिए आविष्कृत की, उसका नाम है सभ्यता।

एक संस्कृत व्यक्ति किसी नयी चीज़ की खोज करता है; किन्तु उसकी संतान को वह खोज अपने पूर्वज से अनायास ही प्राप्त हो जाती है। जिस व्यक्ति की बुद्धि ने अथवा उसके विवेक ने किसी भी नए तथ्य का दर्शन किया, वह व्यक्ति ही वास्तविक संस्कृत व्यक्ति है और उसकी संतान जिसे अपने पूर्वज से वह वस्तु अनायास ही प्राप्त हो गई है, वह अपने पूर्वज की भाँति सभ्य भले ही बन जाए, संस्कृत नहीं कहला सकता। एक आधुनिक उदाहरण लें। न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का आविष्कार किया। वह संस्कृत मानव था। आज के युग का भौतिक विज्ञान का विद्यार्थी न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण से तो परिचित है ही; लेकिन उसके साथ उसे और भी अनेक बातों का ज्ञान प्राप्त है जिनसे शायद न्यूटन अपरिचित ही रहा। ऐसा होने पर भी हम आज के भौतिक विज्ञान के विद्यार्थी को न्यूटन की अपेक्षा अधिक सभ्य भले ही कह सकें, पर न्यूटन जितना संस्कृत नहीं कह सकते।

आग के आविष्कार में कदाचित् भूख एक प्रेरणा रही। सुई-धागे के आविष्कार में शायद शीतोष्ण से बचने तथा शरीर को सजाने की प्रवृत्ति का विशेष हाथ रहा। अब कल्पना कीजिए उस आदमी की जिसका पेट भरा है, जिसका तन ढँका है; लेकिन जब वह खुले आकाश के नीचे सोया हुआ रात के जगमगाते तारों को देखता है, तो उसको केवल इसलिए नींद नहीं आती क्योंकि वह यह जानने के लिए परेशान है कि आखिर यह मोती भरा थाल क्या है? पेट भरने और तन ढँकने की इच्छा मनुष्य की संस्कृति की जननी नहीं है। पेट भरा और तन ढँका होने पर भी ऐसा मानव जो वास्तव में संस्कृत है, निठल्ला नहीं बैठ सकता। हमारी सभ्यता का एक बड़ा अंश हमें ऐसे संस्कृत आदमियों से ही मिला है, जिनकी चेतना पर स्थूल भौतिक कारणों का प्रभाव प्रधान रहा है, किन्तु उसका कुछ हिस्सा हमें मनीषियों से भी मिला है जिन्होंने तथ्य-विशेष को किसी भौतिक प्रेरणा के वशीभूत होकर नहीं, बल्कि उनके अपने अंदर की सहज संस्कृति के ही कारण प्राप्त किया है। रात के तारों को देखकर न सो सकने वाला मनीषी हमारे आज के ज्ञान का ऐसा ही प्रथम पुरस्कर्ता था।

(558 शब्द)

4. निम्नलिखित गद्यांश का अंग्रेज़ी में अनुवाद कीजिए : 20

समय अनमोल है। वास्तव में, समय ही संसार की एकमात्र ऐसी चीज़ है, जो सीमित है। अगर आप दौलत गँवा देते हैं, तो दोबारा कमा सकते हैं। घर गँवा देते हैं, तो दोबारा पा सकते हैं। लेकिन अगर समय गँवा देते हैं, तो आपको वही समय दोबारा नहीं मिल सकता।

अगर हम जीवन में कुछ करना, कुछ बनना, कुछ पाना चाहते हैं, तो यह अनिवार्य है कि हम समय का सर्वश्रेष्ठ उपयोग करना सीख लें। समय का सदुपयोग करके हम वह सब हासिल कर सकते हैं, जो हम हासिल करना चाहते हैं।

कहा जाता है "समय ही धन है"। परन्तु यह कहावत पूरी तरह सच नहीं है। सच तो यह है कि समय सिर्फ संभावित धन है। अगर आप अपने समय का सदुपयोग करते हैं, तभी आप धन कमा सकते हैं। दूसरी ओर, अगर आप अपने समय का दुरुपयोग करते हैं, तो आप धन कमाने की संभावना गँवा देते हैं। जब आप समय के उपयोग को लेकर सतर्क हो जाएँगे तब समय बर्बाद करना छोड़ देंगे। आप अपने समय के बेहतर उपयोग के तरीके खोजने लगेंगे। आप कम समय में ज्यादा काम करने के उपाय खोजने लगेंगे। अगर आप वास्तव में समय प्रबंधन करना चाहते हैं, तो आपको केवल चेतन मन का ही नहीं, बल्कि अवचेतन मन का भी इस्तेमाल करना होगा। यही आपको ऐसे नये-नये तरीके सुझाएगा, जिनकी बदौलत आप कम समय में ज्यादा काम करने के उपाय खोजने में कामयाब होंगे।

5. निम्नलिखित गद्यांश का हिन्दी में अनुवाद कीजिए: 20

We cannot deny the importance of games in life as games make a person sound in body and mind. Society expects of a person to fulfil all his duties, for which it is important for him to keep healthy. He may be very intelligent, but his intelligence is of no use if he is

not healthy. In some ways, the human body is like a machine. If it is not made use of, it starts to work badly. People who are not fit grow weak; they become more prone to disease. Any form of game is useful, if it gives the body an opportunity to take regular physical exercise. Playing encourages the spirit of sportsmanship. It enables one to deal with life's problems in a wise and natural manner. The important thing in playing is not the winning or the losing, but the participation. We have to remember some other things about playing games. First, it is the physical exercise that is important for health, not the games themselves, and there are other ways of getting this. Is not India the home of yoga? When we think of the phrase - a healthy mind in a healthy body - we should not forget that it is the mind which is mentioned first. And if we let games become the most important thing in our lives, then we undermine the importance of the mind.

6. (a) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए : 2×5=10

(i) आँखें बिछाना **2**

(ii) जहर का घूँट पीना **2**

(iii) चाँदी का जूता **2**

(iv) नाक का बाल होना **2**

(v) सिर पर सवार होना **2**

(b) निम्नलिखित वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए: 2×5=10

(i) चाय में कौन गिर गया है। **2**

(ii) यह उन्हें समझ में नहीं आएगा। **2**

(iii) मैं गर्म गाय का दूध पीना चाहता हूँ। **2**

(iv) वह बेफजूल बोल रहा है। **2**

(v) वह विलाप करके रोने लगी। **2**

(c) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखिए: 2×5=10

(i) तन **2**

(ii) भूधर **2**

(iii) द्रुम **2**

(iv) शेर **2**

(v) खग **2**

-

(d) निम्नलिखित युग्मों को इस तरह से वाक्य में प्रयुक्त कीजिए कि उनका अर्थ एवं अंतर स्पष्ट हो जाए :

2×5=10

(i)	रिक्त - रक्त	**2**
(ii)	शाला - साला	**2**
(iii)	सदेह - संदेह	**2**
(iv)	सुखी - सूखी	**2**
(v)	सुधि - सुधी	**2**

***